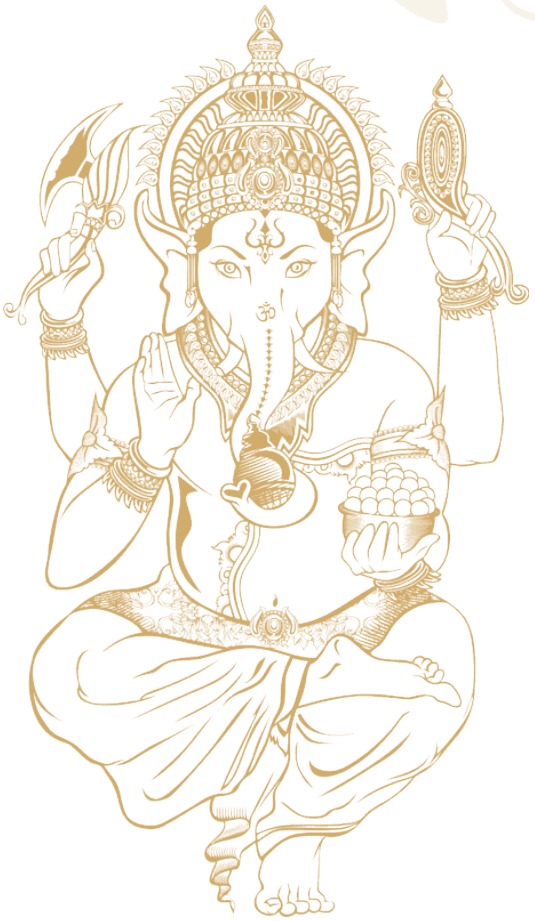

Jagrat

Divyanshi

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121861502

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
04/08/2001	जन्म तिथि	05/01/2006
शनिवार	दिन	गुरुवार
घंटे 13:55:00	जन्म समय	11:35:00 घंटे
घटी 19:37:05	जन्म समय(घटी)	10:43:03 घटी
India	देश	India
Aspur	स्थान	Sagwara River
23:58:00 उत्तर	अक्षांश	23:42:00 उत्तर
74:06:00 पूर्व	रेखांश	74:03:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:33:36	स्थानिक संस्कार	-00:33:48 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:04:10	सूर्योदय	07:17:27
19:14:45	सूर्यास्त	18:01:00
23:52:30	चित्रपक्षीय अयनांश	23:56:26

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
चन्द्र 3वर्ष 0मा 12दि		02:44:36	वृश्चि	लग्न	मीन	06:03:28	गुरु 2वर्ष 10मा 4दि	
राहु		18:09:16	कर्क	सूर्य	धनु	20:49:03	शनि	
17/08/2011		19:17:11	मक	चंद्र	मीन	00:57:47	09/11/2008	
17/08/2029		22:51:18	वृश्चि	मंगल	मेष	18:15:15	10/11/2027	
राहु	30/04/2014	16:24:43	कर्क	बुध	धनु	08:07:19	शनि	13/11/2011
गुरु	22/09/2016	10:54:38	मिथु	गुरु	तुला	20:01:52	बुध	23/07/2014
शनि	30/07/2019	09:23:20	मिथु	शुक्र व	मक	04:40:18	केतु	01/09/2015
बुध	16/02/2022	18:38:02	वृष	शनि व	कर्क	15:41:37	शुक्र	31/10/2018
केतु	06/03/2023	12:08:47	मिथु व	राहु व	मीन	14:22:29	सूर्य	13/10/2019
शुक्र	06/03/2026	12:08:47	धनु व	केतु व	कन्या	14:22:29	चन्द्र	14/05/2021
सूर्य	29/01/2027	29:25:49	मक व	हर्ष	कुंभ	13:56:33	मंगल	22/06/2022
चन्द्र	29/07/2028	13:22:27	मक व	नेप	मक	22:10:38	राहु	28/04/2025
मंगल	17/08/2029	18:45:51	वृश्चि व	प्लूटो	धनु	01:06:07	गुरु	10/11/2027

लग्न-चलित

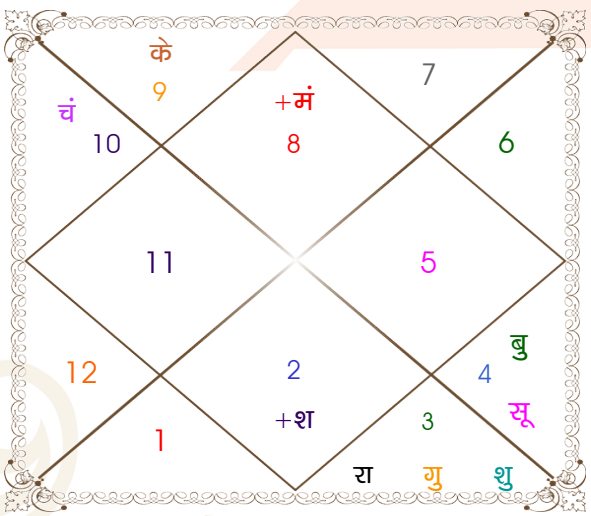

लग्न-चलित

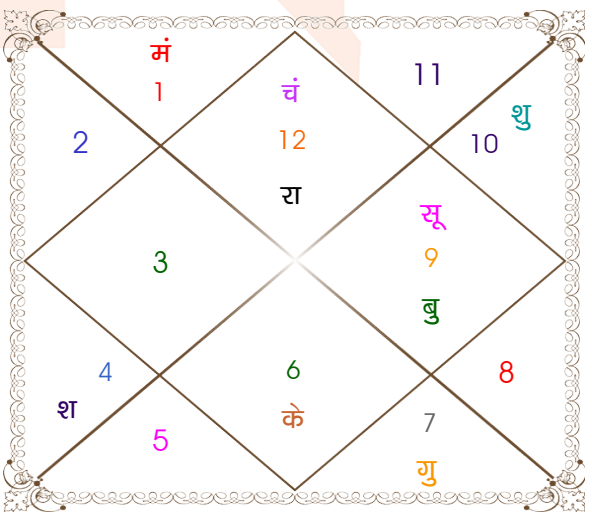

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	जलचर	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	सिंह	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	गुरु	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मकर	मीन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	29.50		

Jagrat का वर्ग मार्जार है तथा Divyanshi का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Jagrat और Divyanshi का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Jagrat मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल Jagrat कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Divyanshi मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु Divyanshi कि कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Jagrat तथा Divyanshi में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।